

न्यायालय भूमि सुधार उपलभाहता, नगर अंतारी (गढ़वा) ।

उत्तरा० नामांतरण अपील वाद सं 18/16-17

श्रीमति भुमुनौत्री देवी _____ अपीलाधीनी ।

प्रशासन भादव कोरह _____ प्रत्याधीनी ।

आदेश

अभिलेख अंतिम स्थिति हेतु उपस्थापित । अपीलाधीनी के विज अधिवक्ता के माध्यम से उत्तराधिकार नामांतरण वाद सं 10/12-13 में दिनांक 9.3.2013 को पारित आदेश के विरुद्ध अपील दाखल किया गया है अपील आवेदन-पत्र समग्र सीमा के वाद दाखल किया गया है जिसके लिए धारा 5 के तहत किलम्व को दूर करने हेतु आवेदन पत्र दिया गया है अपील आवेदन-पत्र पर विज अधिवक्ता को सूना । किलम्व को दूर करने हेतु अपील आवेदन-पत्र अंगीकृत किया गया । तत्पश्चात् उभय पक्षों को नोटिस निर्गत करने हेतु अंचल अधिकारी, धुआँ से मूल अभिलेख को मांग की गई ।

उभय पक्ष उपस्थित होकर अपना-अपना पक्ष प्रस्तुत किए एवं निम्न न्यायालय से मूल अभिलेख प्राप्त ।

अपीलाधीनी के विज अधिवक्ता का कथन है कि राजलव गाम-सगमा में 3-54 एकड़ एवं गाम सैह्य में 3-10 एकड़ अपीलाधीनी एवं प्रत्याधीनी के पिता-रामवरण भादव को प्राप्त है रामवरण भादव के मरणोपरान्त उनके पंशज में उनकी दूसरी पत्नी, 3 लीनपुत्र एवं एक पुत्री पची । मांगधात्री के पत्नी से अपीलाधीनी ने वर्ष 2012 में निबंधित दस्तावेज सं 2630 दिनांक 11-6-2012 में गाम सगमा में 1-54 1/2 एकड़ खरीद किए हैं इस प्रकार मांगधात्री के संपत्ति में अपीलाधीनी का 2/5 अंश हिस्सा का हफ्ता हो गयी । अपीलाधीनी एवं प्रत्याधीनी के बीच व्यवहार न्यायालय वचवाटा वाद चल रहा है जिसका वाद सं 150/2015 है जिसमें अभी तक अपीलाधीनी एवं प्रत्याधीनी के बीच वचवाटा नहीं हुआ है प्रत्याधीनी सं 2 एवं 3 के द्वारा लिखित प्रस्तुत

5-1-2018

में भी वरवाट नहीं हुआ है का उल्लेख किया है और न्यायालय में उपस्थित होकर भी मौखिक ध्यान दिया है प्रत्यर्था सं 1 जाली पंचनामा हैषारफाफा अंचल अधिकारी के कार्यालय में अध्यापक वरवाट नामांतरण प्रस्ता है जिसमें अंचल अधिकारी के द्वारा मांगपारी के अन्य वारिसों को निरासूचना निर्गत किए ही वरवाट नामांतरण की स्वीकृति प्रदान कर दी गई है जो गलत है अंचल अधिकारी, धुली द्वारा वरवाट नामांतरण वाद सं. 10/12-13 में दिनांक 9.3.2013 को पारित को निरस्त करते हुए अपील आवेदन-पत्र स्वीकृत की जाए। अपीलार्थी अपने दावे के समर्थन में कागजी साक्ष्य प्रस्तुत है:-

(1) केवाला सं- 2630 दि. 11.6.2012 की दाया प्रति ।

प्रत्यर्था सं- 2 एवं 3 के अधिवक्ता का कथन है कि हमलोगों के बीच कोई वरवाट नहीं हुआ है प्रत्यर्था 3 न्यायालय में उपस्थित होकर भी मौखिक रूप में ध्यान दिया कि वरवाट नहीं हुआ है वरवाट वाद गढ़वा व्यवहार न्यायालय में चल रहा है जिसका फैसला नहीं हुआ है प्रत्यर्था सं. 01 उपस्थित होकर पुकार पर अनुपस्थित । वाद में प्रत्यर्था सं 1 के द्वारा प्रस्तुत दाखिल किया गया है जिसमें उल्लेख किया गया है कि ग्राम पंचायत में लोगों भाईयों के बीच वरवाट हुआ है जो अभिलेख में संलग्न है वरवाट नामांतरण वर्ष 2012-13 में हुआ है जबकि गढ़वा व्यवहार न्यायालय में वर्ष 2015 में वरवाट वाद दाया किया गया है वरवाट नामांतरण वर्ष 2012-13 में ही हो गया है इतने पर के अर्थ के बाद अपील दाया किया गया है, जो चलने योग्य नहीं है प्रत्यर्था सं- 1 के प्रस्तुत में उल्लेखित है लेकिन सुनवाई के दौरान प्रत्यर्था सं- 01 के अधिवक्ता अनुपस्थित ।

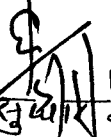
उभय पक्षों के सिद्ध अधिवक्ताओं को सूना । उभय पक्षों के तर्कों, उपलब्ध कागजात एवं अंचल अधिकारी, धुली से प्राप्त प्रस्ता के अवलोकन से विदित होता है कि वरवाट नामांतरण वाद में मांगपारी के सभी वारिसों को न तो नोटिस किया है और न ही प्रक्रिया का ही प्रारंभ किया गया है मात्र पंचायती वरवाट एवं हलका फर्माया । अंचल निरीक्षक के जांच-प्रतिवेदन को

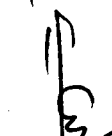
आप्यात मानकर उन्हापि कार नामांतरण की कारवाई की गई है
जो नियमानुसार प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया है।

अतः अंचल अधिकारी, घुस्की के उन्हापि कार नामांतरण
में दिनांक 9-3-2013 को नद सं-10/12-13 में पारित आदेशों को
निरस्त करने हुए अपील आवेदन पत्र स्वीकृत किया जाता है।
आदेशों की प्रति अनुपालन हेतु अंचल अधिकारी, घुस्की
को भेजे।

इसी के साथ नद की कारवाई समाप्त की जाती है।

लेखापत्र एवं संशोधित।


म.सु.उपाध्याय
नगर उधारी।


म.सु.उपाध्याय
नगर उधारी।